नई दुनिया
6.7.2001

खत्म होते नजर नहीं आती विश्व की शरणार्थी समस्या

मयंक शेखर

अकाल, गृहयुद्ध और विभिन्न देशों में चल रही लड़ाई के कारण पूरे विश्व में शरणार्थियों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। इनमें सबसे ज्यादा संख्या एशिया, अफ्रीका और पूर्व सोवियत संघ से अलग होकर बिखरे देशों के शरणार्थियों की है।

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी आयुक्त कार्यालय से प्राप्त दिसंबर, २००० तक के आँकड़ों के अनुसार अभी दुनिया में कुल ३ करोड़ ५० लाख शरणार्थी हैं। ऐसे लोगों की संख्या भी लाखों में है जो शरणार्थी आयुक्त कार्यालय की सूची में दर्ज नहीं हैं और उन्हें मानवीय आधार पर भी कोई सहायता नहीं मिलती। एशिया और अफ्रीका के सुदूर प्रांतों में ऐसे लाखों शरणार्थी हैं जो मैदानों, पहाड़ी गुफाओं, तटीय इलाकों और जंगलों में खुले आसमान के नीचे जी रहे हैं। इन्हें संयुक्त राष्ट्र से जो खुराक मिल पाती है उससे एक दिन में एक ही बार इनका पेट भर पाता है।

नए संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी आयुक्त रूद लुब्बर्स का कहना है कि इनमें से ५० लाख शरणार्थी तो ऐसे हैं जो सीधे उनके संरक्षण में आते हैं और करीब दस लाख शरणार्थियों ने औद्योगिक देशों से संरक्षण पाने का आवेदन कर रखा है, जिन्हें गृहयुद्ध के चलते अपने घर-बार छोड़ने को मजबूर होना पड़ा। इन शरणार्थियों में अधिकांश अफ्रीका के हैं, जहाँ के कई देशों में गृहयुद्ध चल रहे हैं और जिनके समाप्त होने के आसार नजर नहीं आते। अपने पूर्ववर्ती सादाको ओगाता की तरह लुब्बर्स इस बात से दुःखी हैं कि जितनी तेजी से विश्व में शरणार्थियों की संख्या बढ़ रही है, उस हिसाब से उनके कोष में बढ़ोतरी नहीं होती। इसके चलते शरणार्थियों के जीवनयापन के लिए बुनियादी जरूरतें पूरी करना भी संभव नहीं हो पा रहा है।

शरणार्थी समस्या की जड़ में है बड़े देशों की प्रतिद्वंद्विता और खुद को अधिक ताकतवर दिखाने की लड़ाई, जिस वजह से हिंसा पैदा होती है। प्रायः ऐसा देखा गया है कि ताकतवर देश अपना वर्चस्व कायम करने की कोशिश में जिन देशों को हिंसा की आग में झोंक देते हैं, वे देश सालोंसाल इससे उबर नहीं पाते। इनमें एशिया, अफ्रीका और लातिनी अमेरिका के देशों की संख्या सबसे ज्यादा है। आज चंद्रमा पर घर बसाने के लिए जल की खोज की जा रही है, जबकि धरती पर जल के अभाव में गृहयुद्ध की आग में झुलसकर लाखों लोग भुखमरी के शिकार हो रहे हैं। ऐसे देशों में नाम आता है- सोमालिया, इथियोपिया, नाइजीरिया, नाइजर, सिएरा, लिओन, सूडान, आइवरी कोस्ट, चाड, मोजाम्बिक और अंगोला का।

सन १९८९ में सोवियत संघ में बिखराव की प्रक्रिया शुरू हुई और उसके बाद से उससे अलग हुए किसी भी देश में आज तक पूर्ण शांति कायम नहीं हो पाई है। इधर कोसोवो में अमेरिका द्वारा की गई बमबारी के बाद देश छोड़कर भागे लोगों की संख्या ६० हजार से भी ज्यादा हो गई है। यह बमबारी करने वाले नाटो सूत्रों से प्राप्त आँकड़ा है, जो खाड़ी युद्ध की तरह रिहायशी इलाकों में बम न गिराने का दावा करते रहे हैं। जाहिर है कि वास्तविक संख्या इससे कहीं ज्यादा है। कजाकिस्तान में विद्रोहियों को कुचलने की रूसी राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन की कार्रवाई से फिर सैकड़ों गाँव व शहर वीरान हो रहे हैं जबकि इसके पड़ोस में स्थित चेचन्या पहले से ही सुलग रहा है। लड़ाइयों से उजड़े लोगों के अच्छे दिन लौटने के निकट भविष्य में आसार भी नहीं हैं।

सन् १९९४ में रवांडा में हूतू और तुत्सी कबीलों के बीच शुरू हुए संघर्ष के कारण बेघरबार हुए लोगों की संख्या अब तक पाँच लाख का आँकड़ा पार कर चुकी है। बुरूंडी में १९९३ में संघर्ष शुरू हुआ और वहाँ से भागकर लोगों ने पड़ोसी देशों तंजानिया और जाइर में शरण ली, जिससे वहाँ की सरकारों पर अतिरिक्त बोझ पड़ा।

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी आयोग के लिए सभी शरणार्थियों के स्थायी गुजर-बसर का इंतजाम करना संभव नहीं है। शरणार्थियों के लिए सहायता तभी तक दी जाती है, जब तक उनके अपने देश में उनके लिए अनुकूल स्थिति और वापसी के लिए सही माहौल की स्थापना नहीं हो जाती। वैसे हकीकत यह है कि यह अनुकूल स्थिति कभी नहीं आ पाती और अगर माहौल थोड़ा बहुत ठीक होता भी है तो शरणार्थी दहशत के कारण लौटने को तैयार नहीं होते।

विश्व शरणार्थी दिवस (२० जून) को जारी शरणार्थी आयोग की रिपोर्ट में इस बात के लिए भी दुःख व्यक्त किया गया है कि युद्धरत सैनिक गुट प्रतिरोध की आग में इस तरह जलते रहते हैं कि अपने प्रतिद्वंद्वी के प्रभाव वाले इलाकों में रहने वाले लोगों की जान लेने और महिलाओं पर जुल्म ढाने से भी बाज नहीं आते। आज हालत यह है कि ३५ देशों में गृहयुद्ध जारी है और इन देशों के शरणार्थी जब हालात कुछ सामान्य होने पर अपने घरों को वापस लौटते भी हैं तो उनके लिए वहाँ रहना संभव नहीं हो पाता, क्योंकि आजीविका के अभाव में वे बेबस हो जाते हैं और उन्हें दोबारा उजड़ते देर नहीं लगती।

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी आयुक्त को इस बात का भी अफसोस है कि अमेरिका और यूरोप के देश शरणार्थियों की मदद करते समय राजनीतिक पूर्वाग्रहों से ग्रस्त रहते हैं। पिछले दिनों सुरक्षा परिषद में इस विषय पर गंभीर बहस हुई और सभी सदस्य देशों ने भी इस बात को स्वीकार किया। अमेरिकी प्रतिनिधि ने तो यहाँ तक स्वीकार किया कि अमेरिका ने शरणार्थियों के लिए जो १ करोड़ १७ लाख डॉलर आवंटित किए, उनमें से मात्र ६६ लाख डॉलर अफ्रीकी शरणार्थियों के लिए हैं, जबकि संसार में अफ्रीकी शरणार्थियों की संख्या ही सबसे ज्यादा है। इतना ही नहीं, यूरोप में कोसोवो शरणार्थियों को जहाँ १.६० डॉलर हर रोज दिया जा रहा है वहीं अफ्रीकी शरणार्थियों के लिए मात्र ०.६० डॉलर रोजाना मिलना ही निर्धारित है। इससे भी कमाल की बात तो यह है कि २० हजार कोसोवो शरणार्थियों को अमेरिका ने अपने बूते पर पनाह दी है।

अब लौटते हैं भारत की ओर, जहाँ कश्मीर छोड़कर भागे हुए लोगों की संख्या ५० हजार से ज्यादा है। कश्मीरी पंडितों के प्रवक्ता एम.एल. हाण्डू के मुताबिक पहले तो उन्हें अपना घर-बार छोड़ने पर मजबूर कर दिया गया और फिर उनका मकान, जमीन-जायदाद सब दखल कर लिया गया। अब सवाल यह है कि अगर ये लोग अपने घर लौटना भी चाहें तो इनका घर है कहाँ? वहाँ जाकर ये लोग रहेंगे कहाँ? कारगिल संकट से विस्थापित हुए लोगों की अभी गणना नहीं की जा सकी है। इन लोगों को किसी अंतरराष्ट्रीय एजेंसी से कोई मदद नहीं मिल पा रही है। त्रासदी तो यह है कि इन लोगों को इस इलाके में हालात सामान्य होने के कोई आसार भी दिखाई नहीं देते। जम्मू-कश्मीर के जनकार्य मंत्री कमल अली अखून ने स्वीकार किया है कि ये शरणार्थी बड़ी खराब परिस्थितियों में जी रहे हैं। विस्थापित पंडितों के संगठन कश्मीर समिति के अध्यक्ष सी.एल. गडू, पनून कश्मीर के समन्वयक युवराज रैना, संयोजक अग्निशेखर काफी समय अमेरिका में रहते हैं। पिछले वर्ष सीनेटर फ्रैंक पलोन ने इनकी मदद के लिए एक करोड़ डॉलर का प्रस्ताव किया, जब ये नेता १४ सितंबर को 'बलिदान दिवस' मनाने कश्मीर आए थे। एक दशक पहले इसी तारीख को कश्मीरी पंडितों के जुझारू नेता टीकालाल टपलू की हत्या कर दी गई थी।

भूटान, म्यांमार और बांग्लादेश से भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में प्रवेश करने वाले शरणार्थियों के आगमन का सिलसिला भी लगातार जारी है। १९७२ से चल रही त्रिपुरा की चकमा समस्या का अब तक कोई हल नहीं निकला है। बांग्लादेश के चटगाँव इलाके के पहाड़ी गाँवों से भागकर भारत आए इन शरणार्थियों में से अधिकांश यद्यपि स्वदेश लौट चुके हैं, लेकिन वहाँ उनके साथ बाहरी लोगों जैसा बर्ताव किया जा रहा है और ये लोग बड़े कष्ट में रह रहे हैं। बांग्लादेश में पिछले २८ वर्षों से रह रहे, पाकिस्तान को अपना मुल्क मानने वाले बिहारी शरणार्थियों की हालत तो इतनी दयनीय है कि कोई देश उन्हें अपनाने को तैयार नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी आयोग के भारतीय प्रतिनिधि ए.पी. महीमा ने पड़ोसी देशों से भारत में आने वाले शरणार्थियों के साथ भारत में किए जाने वाले अच्छे व्यवहार की तारीफ तो की है, लेकिन साथ ही भारत सरकार से कहा है कि वह एक शरणार्थी कानून बनाए। उन्होंने कहा है कि भारत उन गिने-चुने देशों में से है, जिन्होंने १९५१ के अंतरराष्ट्रीय प्रस्ताव और १९६७ के प्रोटोकॉल पर दस्तखत नहीं किए हैं, लेकिन इनके संविधान में सभी तरह के लोगों (शरणार्थी सहित) को समान रूप से संरक्षण देने का प्रावधान है।

फिलहाल रूद लुब्बर्स को सबसे ज्यादा चिंता है भारत और नेपाल में रह रहे उन तिब्बती शरणार्थियों की, जिन्हें स्वदेश लौटने की कोई सूरत नजर नहीं आती। दूसरे देशों में बसने वाले ये शरणार्थी खुद तो अभावों में रहते ही हैं, संबद्ध देश की मुश्किलें भी बढ़ा देते हैं। उधर अफगानिस्तान में तालिबान के अड़ियल रवैए और दोनों पक्षों के बीच तेज हुई लड़ाई से अन्य देशों की ओर भागने वाले लोगों की संख्या दो लाख से ज्यादा हो गई है।

इस बीच संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने अमीर देशों से शरणार्थी आयोग को दिए जाने वाले अनुदान में बढ़ोतरी का आग्रह किया है। गत वर्ष उन्होंने २.२ अरब डॉलर माँगे थे। लुब्बर्स और अन्नान दोनों ने ही सभी देशों से शरणार्थियों को शरण देने की नीति उदार बनाने का भी आग्रह किया है।

जाएँ तो जाएँ कहाँ...!

* विश्व में साढ़े तीन करोड़ से अधिक लोग शरणार्थियों का जीवन जीने को मजबूर।
* पैंतीस देशों में जारी गृहयुद्धों ने लाखों लोगों को बेघर किया।
* गृहयुद्ध से पीड़ित शरणार्थी जब स्वदेश लौटते भी हैं तो वहाँ न घर होता है, न रोजगार।
* अमेरिका ने स्वीकार किया है कि वह योरपीय शरणार्थियों की अधिक मदद करता है, अफ्रीकी शरणार्थियों की कम।
* अपने ही देश में शरणार्थी बने कश्मीरी पंडित खराब परिस्थितियों में जीने को मजबूर।
* तिब्बती शरणार्थियों को स्वदेश लौटने की कोई सूरत नजर नहीं आती।
* बांग्लादेश के बिहारी शरणार्थियों को कोई देश अपनाने को तैयार नहीं।